Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 02/September/2025 **IJRAW:** 2025; 4(10):653-657 **Accepted:** 13/October/2025

प्राचीन भारतीय संस्कृति में स्वस्तिक व स्वस्तिक का योगिक महत्व

*[1]पोरस कुमार महावर

*[1]आचार्य, इतिहास विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत।

सारांश

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की विरासत में स्वस्तिक का विशेष महत्व रहा है जो वर्तमान समय में भी शुभ कार्य में सशक्त रूप से उपयोग में है। वैदिक काल से ही स्वस्तिक का महत्व रहा जिनका प्रयोग शुभता तथा सांकेतिक विचारों के आधार पर किया जाता रहा था। जो समय एवं स्थान के साथ धार्मिक प्रतीक के रुप में तथा कुछ समयानुरूप रूप में परिवर्तन होता रहा है। भारतीय संस्कृति में प्रतीक निरन्तरता के प्रेरक रहे है। भारतीय परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले प्रतीक चिन्हों के कारण भी विशेष अर्थपूर्ण हो जाते है। यह समकालीन संस्कृति में प्रतीक चिन्हों के महत्व को इंगित करते है यहाँ सूर्य, चन्द्रमा, कलश, स्वस्तिक, मीन, पर्वत, आदि के आकार–प्रकार का अंकन भारतीय इतिहास में उनके महत्व को रेखांकित करता है यह संस्कृति में प्रचलित मांगलिक प्रतीको के प्रति राजसत्ता की सहज आस्था का प्रमाण है। वर्तमान में लगभग प्रत्येक मांगलिक कार्य में आड़े–तिरछे रेखाओं द्वारा निर्मित विविध कला स्वरूप का प्रयोग किया जाता है जिसमें स्वास्तिक, नवग्रह एवं शुभ चिन्हों का अंकन मंगल कामना हेतु बनाये जाते है। स्वस्तिक न केवल एक प्रतीक है, बल्कि योग साधना में एक शक्तिशाली उपकरण है, जो साधक को ब्रह्मांड की अनंत ऊर्जा से जोड़ता है। योग व अध्यात्म में स्वस्तिक का योगिक महत्व अधिक है।

मुख्य शब्दः भारतीय संस्कृति, प्रतीक चिन्ह।

प्रस्तावना

कला के उद्गम के साथ ही स्वस्तिक का इतिहास जुड़ा हुआ है। इसकी उत्पत्ति का सम्बन्ध मानव के उद्गम से माना जाना गलत नहीं होगा। प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में इन प्रतीक चिन्हों का प्रयोग बहुतायत रूप से किये गये है। हड़प्पा संस्कृति से प्राप्त मुहरों पर ज्यामितीय स्वस्तिक के रुप में इनका प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त वैदिक संस्कृति में यज्ञ–अनुष्ठानों व धार्मिक समारोह और वेदियों पर शुभ शुरुआत के समय ऊर्जा और आध्यात्मिक ऊर्जा का स्त्रोत सूर्य के प्रकाश का प्रतिनिधित्व करने में स्वस्ति वाचन की महत्ता को प्रतिपादित किया गया, एवं उत्तर वैदिक संस्कृति में स्वस्तिक के केन्द्रिय बिन्दु को धन, स्वास्थ्य और समग्र कल्याण का प्राथमिक प्रतीक माना है। बौद्ध संस्कृति में शांति, सद्भाव और ज्ञानोदय व दुखों से मुक्ति के मार्ग का प्रतीक माना है जो बुद्ध के पदचिन्हों और जीवन के शाश्वत चक्र का प्रतिनिधित्व करता है, जैन संस्कृति में सातवें जैन तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का प्रतीक चिन्ह है। मौर्य, शुंग एवं कुषाण कालीन कला में विविध प्रतीक के रुप में प्रयोग निहित है। स्वस्तिक एक प्राचीन भारतीय संस्कृति में शुभता और सकारात्मकता का प्रतीक है और यह विभिन्न धर्मो में आध्यात्मिक मान्यताएं रखता है।

उद्देश्य

1. भारतीय संस्कृति में स्वास्तिक की महत्ता को समझना।
2. स्वस्तिक के सांकेतिक अर्थो को समझते हुये ऐतिहासिक अध्ययन में उनका महत्व समझना।
3. स्वस्तिक का योगिक महत्व के कारक का ज्ञान प्राप्त करना।

संकल्पना

भारतीय इतिहास तथा संस्कृति के ज्ञान स्वरुप प्रतीकात्मक कला विधायें इतिहास लेखन के मुख्य स्त्रोत के रूप में सर्वकालिक रुप में वैश्विक स्तर पर अपना विशेष महत्व रखती हैं।

***Corresponding Author:** पोरस कुमार महावर

शोध पत्र

भारतीय संस्कृति में स्वस्तिक एक शुभता और मंगल का सूचक है, जो कल्याण, समृद्धि और उत्साह का प्रतीक माना जाता है। संस्कृत शब्द स्वस्ति से उद्धृत है, जहां सु का अर्थ शुभ और अस्ति का अर्थ होना है, अर्थात शुभ हो या कल्याण हो। स्वस्तिक वेदों, उपनिषदों और पुराणों में विभिन्न रूपों में वर्णित है। वैदिक कालीन संस्कृति में विविध प्राकृतिक उपादानों को पूजा जाता था जिनमें रोशनी का कारक सूर्य [1] सर्वोपरि था, इसके साथ ही शक्ति और ऊर्जा के द्योतक व ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने वाले– अग्नि [2] आकाश, मरुत [3], वर्षा, जल [4] नदी, पर्वत, पुष्प, वृक्ष आदि की ऋचाओं के वाचन से प्रतीक स्वरूप पूजन की परम्परा मिलती है [5] जो परवर्ती काल में स्वतन्त्र रूप से पूजे जाने लगे थे जिनके फलस्वरूप उनकी मूर्ति निर्माण की परम्परा आरम्भ हो गयी थी परन्तु स्वस्तिक का अस्तित्व बना रहा जिनमें मांगलिक प्रतीकों का स्थान देवी–देवताओं के उपस्थिति के कारक बन गये थे। सिंधु घाटी की सभ्यता स्वस्तिक के प्रयोग को प्रमाणित करती है। सकारात्मक प्रतीकवाद के अन्तर्गत वैदिक धर्म में स्वस्तिक वाचन मंत्र के रुप में सूर्य, धन और सौभाग्य का प्रतीक है, उपनिषदों में ब्रह्म का प्रतीक, बौद्ध धर्म में शाश्वतता और समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है तथा जैन धर्म में भी पवित्रता का प्रतीक मानाजाता है। [6]

स्वस्तिक

स्वस्तिक, स्वास्तिक, सुवास्तिक 18 आदि शब्द स्वस्तिक के लिए प्रयोग में लाये गये है। स्वस्तिक प्रायः हर युग एवं समय के साथ रूप परिवर्तित करता आया है परन्तु इसका अर्थ सदा एक ही भाव को प्रदर्शित करता रहा है; वह है, कल्याण का भाव। स्वस्तिक भारत के साथ विदेशों में भी अपना कल्याणकारी भावना के साथ प्रयोग में लाया गया है। स्वस्तिक शब्द का अर्थ सु–शुभ अस्ति का अर्थ–कल्याण हो। स्वस्तिक का प्रयोग वैदिक संस्कृति में वाचन के रुप में इसके नामकरण के पूर्व से होता आ रहा है। [7] इस प्रतीक चिन्ह के विकास को देखा जाय तो यह यूनानी क्रास का आरम्भिक रूप माना जा सकता है जिसकें चारों ओर छोर चारों दिशा में सही अनुपात में अंकित हैं। स्वस्तिक का स्वरूप दो एक समान रेखा एक दूसरे को समान बिन्दु को काटती हुई चार दिशा की ओर इंगित करती बिन्दु पर होता है। शुभ स्वस्तिक का स्वरूप में उसकी मुड़ी हुई धुरी दहिनी ओर होता है यदि मुड़ाव बाई ओर हों तो इसे सुवास्तिक की संज्ञा दी गई है। स्वास्तिक शब्द फ्रांस भाषा की देन है। इसका सम्बन्ध सूर्य के साथ स्थापित किया गया है। इसके चार छोर चार दिशाओं का प्रतिनिधत्व करते हैं जिसके चार लोकपाल है। पूर्व–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण। यह समस्त नाद ब्रह्म तथा सृष्टि का प्रतीक चिन्ह है, प्राकृत शब्द ''सत्थिय'' स्वास्तिक का ही पर्याय है। 'स्वस्तिक' शब्द की व्याख्या उसके कल्याण, समृद्धि और शुभता के स्वरूप से स्पष्ट होती है। संस्कृत शब्द स्वस्ति से निकलकर 'स्वस्तिक' शब्द सु + अस्ति + क के संयोजन से बना है। इसमें 'क' प्रत्यय रूप में संयुक्त तथा सु + अस्ति शुभ हो या 'कल्याण हो' की भावना का द्योतक है। विभिन्न मांगलिक अवसरों पर मंत्रोच्चारण में 'ओ' शब्द स्वस्ति के साथ जोड़कर देवताओं का आव्हान होता था ! 'ओ' शब्द ब्रह्मनाद का प्रतीक स्वरूप है। वैदिक साहित्य में कल्याणकारी स्वस्तिक–मण्डल का उल्लेख पाया गया है। कनिंघम 'स्वस्ति' शब्द को 'सु' तथा 'अस्ति' शब्दों से निर्मित माना है तथा इसका अर्थ 'अच्छा' अथवा 'कल्याणमय' बताया है। [8]

वेदों में स्वस्तिक

वेदों में स्वस्तिक को जीवनदाता और सभी देव शक्तियों का केंद्र सूर्य को माना है। इसकी चार भुजाएं चार दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम), चार वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र), चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) और चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का प्रतीक हैं। ऋग्वेद में इसे पवित्र (सूर्य) से जोड़ा गया है, और इसे समस्त जगत का कल्याणकारी तथा देवताओं को अमरत्व प्रदान करने वाला कहा गया है।

कल्याण की कामना से प्रेरित स्वस्तिवाचन मंत्र

ओइम स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।
ओइम शान्तिः शान्तिः शान्तिः। (ऋग्वेद 1.89.6)

(अर्थ हे महान यशस्वी इंद्र, हमें कल्याण प्रदान करो, हे विश्व के ज्ञान के स्वरूप पूषा (सूर्य का रूप), हमें कल्याण दो, हे प्रबल हथियार वाले गरुड (गति के स्वामी), हमारी रक्षा व मंगल करो, हे बृहस्पति (वेद वाणियों के स्वामी), हमें ज्ञान व शुभ प्रदान करो।) यह मंत्र चार नक्षत्रों (चित्रा, पुषा, रेवती, बृहस्पति) की स्थिति से स्वस्तिक आकृति का निर्माण बताता है। जो तीन प्रकार की शांति को दर्शाता है– आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक। वर्तमान में यह मंत्र किसी भी शुभ कार्य जैसे गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, षोडश संस्कार, यात्रा आदि के आरंभ में बोला जाता है, जिससे सभी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते है। यजुर्वेद (25.21) उपरोक्त स्वस्ति मंत्र यहां भी दोहराया गया है, जो स्वस्तिक को प्राण शक्ति और जीवन के चक्र का प्रतीक बनाता है।

उपनिषदों में स्वस्तिक

उपनिषदों में स्वस्तिक को ब्रह्म का प्रतीक माना गया है, जो समय के चक्र (काल), चार युगों (सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि) और चार ऋतुओं का सूचक है। यह ब्रह्म से निकलने वाली ऊर्जा और सृष्टि के चक्रीय गति को दर्शाता है। यह

मूलाधार चक्र से जुड़ा है, जहां कुंडलिनी शक्ति निवास करती है।
उपनिषदों में सीधे स्वस्तिक मंत्र का उल्लेख नहीं है, बल्कि उपनिषदों से जुड़े शांति पाठ में स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः... से शुरू होने वाला स्वस्तिवाचन मंत्र है, जो देवताओं से कल्याण की प्रार्थना करता है। यह मंत्र विभिन्न देवताओं जैसे इन्द्र, पूषा, गरुड़ (तार्क्ष्य) और बृहस्पति से शुभता, समृद्धि और सुरक्षा की याचना करता है।
मुंडक, मांडूक्य और प्रश्न उपनिषदों की शिक्षाओं से जुड़ा हुआ है जो वेदिक शांति पाठ के स्वस्ति मंत्र को ही दर्शाता है। स्वस्तिक को ब्रह्म का प्रत्यक्ष प्रतिनिधि बताया है, स्वस्ति वाचन मंत्र–

ओइम् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः..... ।

यह मंत्र स्वस्तिक को सूर्य (ब्रह्म का स्रोत) और जीवन की ऊर्जा से जोड़ता है। यह मंत्र किसी एक स्वस्तिक चिन्ह का नहीं, बल्कि स्वस्ति शब्द से कल्याण की कामना करता है, वातावरण को पवित्र और मंगलमय बनाने के लिए शुभ कार्य की शुरुआत और शांति की प्रार्थना का प्रतीक है। [9]

पुराणों में स्वस्तिक [10]

पुराणों में स्वस्तिक को भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र माना गया है, जो शक्ति, प्रगति, प्रेरणा और शोभा का समन्वय है। इसकी चार भुजाएं विष्णु की चार भुजाओं का प्रतीक हैं, जो सृष्टि के विकास और विनाश में संतुलन बनाती हैं। केंद्र बिंदु नारायण की नाभि–कमल है, जहां से ब्रह्मा की उत्पत्ति होती है। यह गणेश का साकार रूप भी है, और हर मांगलिक कार्य में प्रथम पूज्य है। वायवीय संहिता (शिव पुराण का भाग) स्वस्तिक को आठ योग आसनों में से एक बताया गया है, और इसे ब्रह्मा का स्वरूप माना गया है। अन्य पुराणों में स्वस्तिक को विष्णु के चक्र के रूप में वर्णित किया गया है, जो समस्त लोक की सृजनात्मक और चालक शक्ति है। स्वस्तिक विष्णु के सुदर्शन चक्र का प्रतीक है, जिसमें चार भुजाएं चार दिशाओं का पालन करती हैं।
प्राचीन ग्रंथों में स्वस्तिक को हमेशा शुभ कार्यों में प्रयोग करने की सलाह दी गई है। रामायण में स्वस्तिक ग्रहों तथा स्वस्तिक नौकाओं का उल्लेख मिलता है। महाभारत के द्रोणपर्व में कहा गया है कि जब धर्मराज युधिष्ठिर राजदरबार जाने के लिए प्रस्थान कर रहे थे उससे पहले उन्होंने जिन मांगलिक लक्षणों के दर्शन किया करते थे उनमें स्वस्तिक भी सम्मिलित था। जैन मतावलम्बी इसे सथिया शब्द सम्बोधित करते है तथा यह सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का प्रतीक चिन्ह है। यह चिन्ह बौद्ध एवं जैन अष्टमांगलिक चिन्हों में सम्मिलित है। नासिक के एक अभिलेख (संख्या 10) में यह स्वस्तिक प्रतीक ''सिद्धम'' शब्द के बाद अंकित है। उदयगिरि के खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख पर भी मंगलचिन्ह के रूप में स्वस्तिक का अंकन है। अशोक के जौगड़–शिलालेख में स्वस्तिक के तीन प्रतीक का अंकन है। बराबर की पहाड़ी में स्थित कर्ण–गुहाभिलेख, नासिक में उषवदात, भाजा, चन्देरी शिलाभिलेख, मथुरा के प्रस्तर– अभिलेखों, सांची एवं अमरावती के स्तूप– अभिलेखों आदि में स्वस्तिक का अंकन किया गया है। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार यह स्वस्तिक को स्त्री–पुरुष के सम्बन्ध का द्योतक माना हैं। मिस्र में इस चिन्ह का रूपान्तर चिन्ह विशेष में किया गया है जिसे बार ऑफ आइसिस कहते है। हिब्रू लोगों का
यह धार्मिक प्रतीक था। जिसका आकार अंग्रेजी अक्षर के T सदृश था। मेक्सिको के प्राचीन निवासियों का यह प्रतीक इस रूप में था। यूनानियों के कामदेव (वीनस) का प्रतीक + बदलकर भारत के स्वस्तिक को मंगल कार्य के रुप में ही स्वीकार किया है। प्रत्येक देश में यह चिन्ह भिन्न रूपों में सम्बन्धों को दर्शाता है। [11]
जैन तथा बौद्ध साहित्य में स्वस्तिक एक अष्टमांगलिक चिन्ह के रूप में परिलक्षित है। औपपातिक सूत्र 31 में अष्टमांगलिक चिन्हों में स्वस्तिक का स्थान प्रथम बताया गया है। प्रतिष्ठा, सारोहार वास्तुसारप्रकरण तथा अपराजितपृच्छा के अनुसार स्वस्तिक सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का चिन्ह था। ललित विस्तार में सिद्धार्थ के केशवेश के स्वरूपों में विविध चिन्हों का उल्लेख है जिनमें स्वस्तिक की भी गणना है। महापुरुष लक्षणों में भी स्वस्तिक उपस्थित है। मानसार, मयमत तथा काभिकागम में स्वस्तिक एक प्रकार का ग्राम प्रभेद था जो मार्ग योजना पर आधारित था। प्रसाद वास्तु में विभिन्न शैलियों के प्रसादों का उल्लेख मिलता है जिनमें सर्वतोभद्र, नन्द्यावर्त, वर्द्धमान, रूचक, श्रीवत्स आदि के साथ–साथ स्वस्तिक की भी गणना है। अधिकांश विद्वान स्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक मानते हैं। आचार्य अभिनवगुप्त ने अपने ग्रंथ तंत्रालोक में नाद ब्रह्म और शब्द ब्रह्म की उत्पत्ति का विस्तृत वर्णन किया। भारत में स्वस्तिक की पूजा अति प्राचीन काल से प्रचलित है। स्वस्तिक में विविध ज्यामिति आकारों का विशेष स्थान होता है। स्वस्तिक सूर्य के प्रतीकात्मक रूप में सुरक्षा भित्ति का कार्य करता है। [12]

स्वस्तिक का योगिक महत्व [13]

शुभता की प्रतीक स्वस्तिक का योग और अध्यात्म के क्षेत्र में भी इसका गहरा प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक अर्थ है। स्वस्तिक को सृष्टि की गति, चक्र, ऊर्जा और आत्मिक जागृति का प्रतीक माना जाता है। स्वस्तिक का योगिक महत्व प्राचीन ग्रंथों– वेद, उपनिषद, पुराणों व जैन–बौद्ध साहित्य में वर्णित है।

1. स्वस्तिक और चक्र प्रणाली

योग दर्शन में स्वस्तिक को मूलाधार चक्र से जोड़ा जाता है, जो मानव शरीर में कुंडलिनी शक्ति का आधार है। स्वस्तिक की चार भुजाएं मूलाधार चक्र की चार पंखुड़ियों (या चार नाड़ियों) का प्रतीक हैं, जो निम्नलिखित को दर्शाती हैं–

- चार दिशाएं उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, जो स्थूल और सूक्ष्म विश्व में संतुलन का प्रतीक हैं।
- चार तत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, जो मूलाधार चक्र की स्थिरता और भौतिकता से संबंधित हैं।
- कुंडलिनी का जागरण स्वस्तिक की गतिशील संरचना कुंडलिनी की सर्पिल गति को दर्शाती है, जो मूलाधार से सहस्रार चक्र तक जाती है।

स्रोत योग चूड़ामणि उपनिषद में स्वस्तिक को मूलाधार चक्र

का प्रतीक बताया गया है, जहां यह स्थिरता और ऊर्जा के प्रवाह का सूचक है।

2. स्वस्तिक और स्वस्तिकासन

योग में स्वस्तिकासन एक महत्वपूर्ण ध्यान मुद्रा है, जिसका वर्णन हठयोग प्रदीपिका और वायवीय संहिता (शिव पुराण) में मिलता है। यह आसन शारीरिक और मानसिक संतुलन को बढ़ाता है और साधक को ध्यान में स्थिरता प्रदान करता है।

- स्वस्तिकासन का वर्णन इसमें पैरों को एक–दूसरे के ऊपर क्रॉस करके बैठा जाता है, जो स्वस्तिक की आकृति बनाता है।
- यह आसन मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्र को सक्रिय करता है।
- आध्यात्मिक महत्वरू यह आसन मन को एकाग्र करता है और साधक को ब्रह्मांड की चक्रीय ऊर्जा के साथ संनाद करने में मदद करता है।
- मंत्र संनाद स्वस्तिकासन में बैठकर

ओइम् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः..... जैसे मंत्रों का जाप करने से योगी सूर्य की ऊर्जा और ब्रह्म की शक्ति से जुड़ता है।

3. स्वस्तिक और सूर्य का योगिक संबंध

वेदों में स्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक माना गया है, जो योग में प्राणशक्ति और जीवन ऊर्जा का स्रोत है। सूर्य नमस्कार और सूर्य–केंद्रित योग प्रथाओं में स्वस्तिक का प्रतीकात्मक उपयोग होता है, क्योंकि इसकी भुजाएं सूर्य की किरणों और चक्रीय गति का प्रतीक हैं।

- ऋग्वेद (1.89.6): स्वस्ति मंत्र में सूर्य (सवित्र) को स्वस्तिक का प्रतीक माना गया है, जो योगी को प्राण ऊर्जा प्रदान करता है।
- योगिक प्रक्रिया सूर्य की ऊर्जा को आत्मसात करने के लिए स्वस्तिक चिन्ह को ध्यान में केंद्रित किया जाता है, जो साधक को आंतरिक प्रकाश और जागृति की ओर ले जाता है।

4. स्वस्तिक और चार पुरुषार्थ

योग दर्शन में स्वस्तिक चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का प्रतीक है। यह योगी को जीवन के संतुलित पथ पर चलने की प्रेरणा देता है–

- धर्म नैतिकता और कर्तव्य का पालन।
- अर्थ समृद्धि और संसाधनों का संतुलित उपयोग।
- काम इच्छाओं का नियंत्रण और सकारात्मक दिशा में उपयोग।
- मोक्ष आत्मिक मुक्ति और ब्रह्म से एकता।

मुंडक उपनिषद में स्वस्तिक को ब्रह्म की गति का प्रतीक माना गया है, जो योगी को मोक्ष की ओर ले जाता है।

5. पुराणों में स्वस्तिक का योगिक महत्व

पुराणों में स्वस्तिक को भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र से जोड़ा गया है, जो योग में चेतना के चक्र का प्रतीक है।

- विष्णु पुराण स्वस्तिक को सुदर्शन चक्र का प्रतीक माना गया है, जो नकारात्मक शक्तियों का नाश करता है और साधक को शुद्ध चेतना की ओर ले जाता है।
- शिव पुराण (वायवीय संहिता): स्वस्तिक को योग के आठ आसनों में से एक बताया गया है, जो साधक को ध्यान और समाधि में स्थिर करता है।

6. स्वस्तिक और यम–नियम

योग के अष्टांग मार्ग में स्वस्तिक यम और नियम के सिद्धांतों को दर्शाता है। इसकी चार भुजाएं अहिंसा, सत्य, अस्तेय और ब्रह्मचर्य जैसे यमों का प्रतीक हैं, जो योगी के आचरण को शुद्ध करते हैं। स्वस्तिक का केंद्रीय बिंदु समाधि का प्रतीक है, जहां साधक की चेतना ब्रह्मांड से एक हो जाती है।

7. ध्यान और मंत्र योग में स्वस्तिक

स्वस्तिक को ध्यान में एक यंत्र के रूप में उपयोग किया जाता है। योगी इसका चित्रण या यंत्र बनाकर इसके केंद्र पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह प्रक्रिया मन को स्थिर करती है और आत्मिक ऊर्जा को जागृत करती है।

मंत्रः ओइम् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः... (ऋग्वेद 1.89.6)

या ओइम् नमो भगवते वासुदेवाय जैसे मंत्रों का जाप स्वस्तिक मंत्र के साथ किया जाता है।

20वीं शताब्दी में नाजी जर्मनी ने इसे विकृत कर हैकेनक्रॉज बनाया, जिससे पश्चिमी दुनिया में इसका नकारात्मक अर्थ जुड़ गया। फिर भी, एशिया में यह आज भी पूजा, दीपावली और मंगल कार्यों में शुभता का प्रतीक है। [14] हिंदू धर्म में स्वास्तिक सूर्य, गणेश और विष्णु का प्रतीक है, जो चार वेदों, चार युगों और चार आश्रमों का प्रतिनिधित्व करता है। [15]

निष्कर्ष

प्राचीन भारत में वैदिक संस्कृति में वैदिक मंत्रो के द्वारा प्रकृति के विविध देवी देवताओं का आवाहन करते थे जिसका प्रमाण ऋग्वेद के विविध मंत्रो का जाप स्वस्तिकवाचन मंत्र से प्राप्त हो जाता है। वैदिक संस्कृति में शुभ कार्य के फल की प्राप्ति हेतु प्रकृति के पंच तत्वों के साथ–साथ सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, पृथ्वी, नदी, वृक्ष, मरुत, अग्नि आदि की उपासना व आह्वान मत्रों के वाचन से यज्ञ के माध्यम से करना तत्कालीन समाज एवं शासक के धर्म सहिष्णु बने रहने का द्योतक है। उत्तर वैदिक काल में तथा जैन व बौद्ध संस्कृति के समय समाज में निर्गुण व सगुण देवी–देवताओं के पूजा पाठ के साथ कृषि कार्य का आरम्भ हो गया था तथा बाद के काल खण्डो में राजाओं का शासन आरम्भ हो जाता है धार्मिक दृष्टि से स्वस्तिक का अपना एक महत्व है। विविध धार्मिक सांकेतिक के माध्यम से तत्कालीन समाज एवं शासक के धर्म सहिष्णु तथा किस धर्म का पालन किया जाता रहा होगा का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। यह शासक के समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निवर्हन तथा धर्म के महत्व को भी साझा करता है। शासक के धार्मिक क्रियाकलाप समाज के प्रति अपने

उत्तरदायित्व का निवर्हन तथा धर्म के महत्व को भी साझा करता है। स्वस्तिक का योगिक महत्व इसकी चक्रीय गति, सूर्य की ऊर्जा, और चक्र प्रणाली से जुड़ा है। यह योगी को स्थिरता, संतुलन और आत्मिक जागृति प्रदान करता है। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में इसका उल्लेख सृष्टि के मूल सिद्धांतों और योग के अष्टांग मार्ग से जोड़ता है। स्वस्तिक के विविध अलंकृत स्वरूप विविध काल की मुद्राओं पर अंकित किये गए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनरू प्रचोदयातः।। (ऋग्वेद 3.62.10) सूर्यदेव का आह्वान करता है।
2. अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। (ऋग्वेद 1.1.1) अग्नि की स्तुति करता हूँ, जो यज्ञ का पुरोहित (मुख्य पुजारी), देव, और ऋत्विज (यज्ञ करने वाला पुरोहित) है। वह आहुति देने वाला और रत्नों को प्रदान करने वाला है।
3. मरुतः शुचीनि या शन्तमा वर्षणो या मयोभु (ऋग्वेद 2. 33.13) मरुत देवताओं से शुभ व कल्याणकारी वर्षा की प्रार्थना करता है।
4. शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।। हे देवी जल, हमें कल्याणकारी, अमृत प्रदान करने वाली और सुखद हो, ये जलधाराएँ हमारे लिए कल्याणप्रद हों। आपः सूक्त (10.9) का मंत्र 5:
5. मंत्रों का उद्देश्य प्रकृति की शक्तियों को देवत्व प्रदान करना और उनसे सुरक्षा, समृद्धि, ज्ञान व वर्षा जैसी प्राकृतिक आपदाओं से बचाओ प्राप्त करना है, जो प्रकृति पूजा का एक रूप है।
6. पारीक, अवनीश; (1972) हिस्ट्री ऑफ एंशियन्ट इण्डियन कल्चर, वाराणसी, पृष्ठ2–3
7. उपाध्याय, शंकर हरिदत्त; (1989) स्वस्तिक ए सिम्बोलिक यूनिट, इलाहबाद, पृष्ठ 5
8. वही, पृष्ठ 6
9. अग्निहोत्री, महेश, (2001) प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक, दिल्लीपृष्ठ 39
10. वही, पृष्ठ 40
11. जैन, विमल; (2007) फिलॉसफी ऑफ जैनिज्म एण्ड़ बुद्धिज्म; बम्बई, पृष्ठ 45–46
12. अग्निहोत्री, महेश, वही, पृष्ठ 54
13. historyextra.com
14. नवभारतटाइम्स.इण्डियाटाइम्स.कॉमै।